संपादकीय

कक्षा और भारतीय कृ-ि

कृ-ि शिक्षा की दयनीय स्थिति है। भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् का पुनरूत्थान करना अतिआवश्यक है।

यद्यपि भारतीय कृ-ि पर आर्थिक रूप से निर्भर रहना अथवा इसे लाभकारी बनाना एक दूर का सपना है, भारत को आजाद हुऐ 71 व-र् हो चुके हैं, लेकिन अभी भी दरिद्र और लाचार किसान हजारों की संख्या में आत्महत्या करने पर मजबूर हैं। इसका कारण दशकों की अदूरदर्शिता है, क्योंकि अर्थशास्त्री और वैज्ञानिक अभी भी किसानों को केवल अनाज के लिऐ ही आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दे रहे हैं।

किंतु हम इस अवसर पर केवल किसानों के संकट और उनकी निराशा के प्रमुख मुद्दे पर वार्तालाप करेंगे। हमें ृाी-र् स्तर पर ुरूआत करनी होगी। भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् का प्रमुख कार्य कृ-ि शिक्षा, अनुसंधान और कृ-ि विस्तार है। निःसंदेह इसने अनाज की कमी के चुनौती पूर्ण व-ाों में बहुत बड़ा योगदान दिया है। किंतु सच यह है कि इस सफलता के लिऐ हमने पर्यावरण की खराबी की कितनी बड़ी कीमत चुकाई है, और अभी तक उसका परिणाम भुगत रहे हैं। केवल हरित क्रांति और कुछ क्षेत्रों में सफलता ही इस स्थिति के लिऐ पर्याप्त नहीं है।

भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् अब अत्यधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र नहीं रह गया है। अब इसे किसी भी प्रकार से महत्ता नहीं दी जा सकती। इस परि-द् को एक स्वायत निकाय होना चाहिऐ था, किंतु यह कृ-ि और किसान कल्याण मंत्रालय का एक विस्तार के रूप में ही रह गया है। इस परि-द् को वास्तव में एक ऐसी स्वायत निकाय बना देना चाहिऐ, जो सीधे प्रधानमंत्री को रिपोर्ट करे, जैसा अटौमिक एनर्जी कमीशन के मामले में लागू है। इस परि-द् का कार्य कृ-ि अनुसंधान, शिक्षा तक सीमित होना चाहिऐ और भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् के अतिरिक्त अन्य कृ-ि संस्थाओं पर ध्यान नहीं दिया जाऐ। कृ-ि विस्तार के कार्यों को पूरी तरह से राज्य सरकारों को सौंप देना चाहिऐ।

भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् का इतिहास यह रहा है कि इसने फसलों के विज्ञान पर अधिक जोर दिया है और इसकी कीमत पशु पालन उद्योग को चुकानी पडी है, जिसको अभी भी महत्व नहीं दिया जा रहा। सामाजिक, आर्थिक परिणामों और किसानों की समृद्धि पर बिना ध्यान दिऐ अनुसंधान का कार्य करना कोई उपलब्धि नहीं दे पाऐगा। भारत में उगाई जाने वाली फसलों जैसे चावल और गेहूं का मुकाबला अच्छे देशों से किया जाता है, किंतु व-ार् आधारित कृ-ि, दालों, तिलहनों, फल एवम् सब्जियों पर अनुसंधान का कार्य बहुत पिछे चल रहा है। उपभोगता की बदलती हुई आदतों, उनकी पसंद जैसे की अनाज से कुछ और खाद्य पदार्थों पर बल देना, पर्यावरण का

प्रभाव और कृ-ि की बदलती हुई जलवायु के लिऐ लोगों की विद्यमान आवश्यकताओं और उनकी पसंद पर विशे-ा ध्यान देने की आवश्यकता है। मंडियों के बारे में सूचना देना और मौसम का पूर्व अनुमान जैसी क्षमता का निर्माण अभी भी संतो-ाजनक नहीं है।

कृ-ि शिक्षा की विकृत स्थिति निंदनीय है। कुछ राज्य कृ-ि विश्वविद्यालय तो फैशन डिजाईन के कोर्स तक करवा रहे हैं। इससे भी चिंताजनक यह वि-ाय है कि देश भर में 1,000 से अधिक गैर सरकारी निजी कृ-ि कॉलेज हैं जो गली के खोमचे वालों की तरह डिग्रियां बांट रहे हैं। कई कॉलेजों में न तो प्रयोगशाला है, न ही मूलभूत सुविधाऐं हैं अथवा कृ-ि अनुसंधान संबंधी भूमि है। कृ-ि एक राज्य का वि-ाय होने के कारण इस पर भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-ाद् और केन्द्रीय सरकार का कोई भी आदेश लागू नहीं होता जिस कारण प्रत्येक राज्य में नीजी व्यापारी और संस्थाऐं अपना हित साध रही हैं। उनके फलने फूलने का सबसे बडा कारण है कि राज्यों में इस संबंध में कोई नियम या कानून नहीं बनाए गए हैं। पंजाब सरकार ने एक कानूनी अधिनियम अधिसूचित किया है, ऐसा ही अधिनियम अन्य राज्यों में भी लागू किया जाना चाहिऐ।

भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-ाद् के तीन प्रमुख कार्यों में से तकनीकी अंतरण अथवा कृ-ि विस्तार के कार्य राज्यों के साथ मिलकर किऐ जाते हैं, किंतु इन दोनों में ही सफलता नगण्य है। जबसे भारत अनाज के मामले में आत्मनिर्भर हुआ है तबसे ही कृ-ि क्षेत्र में संतु-ट होने के बाद कृ-ि विस्तार के कार्य रूक से गऐ हैं। राज्य सरकारों के जनहित विस्तार के सिस्टम को छोड देने के बाद निजी दुकानदार और व्यापारीयों ने कृ-ि सलाहकारों पर कब्जा कर लिया है, जिस कारण भारतीय किसान, आम जनता और पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड रहा है।

भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-ाद् और राज्य सरकारें मिलकर ृाक्तियों का उपयोग करती हैं और राज्य कृ-ि विश्वविद्यालयों के कार्यों को संचालित करने के लिऐ निधियां उपलब्ध कराती हैं। भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-ाद् द्वारा लगभग 700 कृ-ि विज्ञान केन्द्रों को आर्थिक सहायता दी जाती है और उन्हें क्षमता निर्माण, तकनीकी सुधार एवम् इन्हें किसानों तक पहुंचाने का कार्य सौंपा गया है, किंतु न तो इनमें अपेक्षित कर्मचारी हैं और न ही उपकरण।

व्यवहारिक रूप में राज्य सरकारें अपने राज्य के कृ-ि विश्वविद्यालयों को बहुत कम पैसा दे पाती हैं। इस कारण यह विश्वविद्यालय ऐसे अनुसंधान करने पर बल देते हैं, जिनमें उन्हें कुछ लाभ मिल सके, चाहे उनके राज्य की आवश्यकता कुछ और ही हो। उदाहरण के लिऐ कोई राज्य खरीफ मौसम में धान से अलग कोई फसल उगाना चाहता है, जबकि वहां के विश्वविद्यालय रबी मौसम की फसलों पर अनुसंधान कर रहे होते हैं। ऐसा इसलिऐ होता है, क्योंकि केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के उद्देश्य अलग-अलग होते हैं।

भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् और राज्य ऐजेंसियों का समन्वय असफल सिद्ध हो चुका है। इसलिऐ यदि प्रधानमंत्री कार्यालय कृ-ि अनुसंधान और शिक्षा की जिम्मेवारी स्वीकार करे तो राज्यों के कृ-ि विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों का वेतन केन्द्र सरकार द्वारा जारी किया जाऐगा और कृ-ि विज्ञान केन्द्र राज्यों को सौंपे जा सकते हैं। ऐसा करने से राज्यों को राजस्व खर्च नहीं करना पडेगा और ये विज्ञान केन्द्र भी कृ-ि विस्तार और कृ-ि उन्नति पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करेंगे।

भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् अपनी जिम्मेवारी से बच नहीं सकती, क्योंकि इनमें भर्तियों में गडबडी की जाती है, अंतःप्रजनन और भाई भतीजा वाद का बौलबाला है। सरकारी पद्दोनति नियमों पर आधारित वेतन दिया जाता है और इसके बाद भी अनुसंधान का परिणाम संतो-ाजनक नहीं है और प्रतिभा को नकारा जाता है। खेतों में काम करने वालों में से अधिकतम महिलाऐं हैं, किंतु महिलाओं की भर्ती समान अनुपात में नहीं की जाती। 71 कृ-ि विश्वविद्यालयों और देश भर में 101 अन्य संस्थाओं में आपसी विभागिय समन्वय की कमी है, जिसे तत्काल दूर करने की आवश्यकता है। इसका एकमात्र उपाय कुल संस्थाओं की संख्या को कम करके एक-तिहाई कर दिया जाऐ। इससे भी अधिक बद्तर स्थिति यह है कि भारतीय कृ-ि अनुसंधान परि-द् के अनुसंधान को निजी कंपनियों द्वारा चुरा लिया जाता है या खरीद लिया जाता है। अतः आई.पी.आर. रजिस्ट्रेशन और आंतरिक संसाधन उत्पन्न करने जैसे कार्य जो विकसित देशों के विश्वविद्यालयों में होते हैं, वैसी भारत के कृ-ि संस्थाओं में असंभव प्रतीत होते हैं।

निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ती के लिऐ न केवल कठोरता से कार्य करना होगा, बल्कि कृ-ि अनुसंधान एवम् विकास कार्यों के बजट आबंटन को न्यूनतम सकल घरेलू उत्पाद का 2 प्रतिशत करना होगा, जो इस समय 1 प्रतिशत से भी कम है। किंतु सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इस संकट का स्थाई समाधान करने के लिऐ एक ऐसी मापक पद्धति अपनानी होगी जो इन कृ-ि संस्थाओं के परिणामों की जांच कर सके और उनकी जिम्मेवारी तय भी कर सके। दुर्भाग्वश, जब कोई महत्वपूर्ण निर्णय किऐ जाते हैं तो नीति निर्माताओं के सैद्धांतिक ज्ञान को उन वास्तविक व्यवसायिकों के अनुभव से अधिक महत्व दिया जाता है, जिस कारण देश का कृ-ि संकट अनिश्चित काल तक बढ़ता जा रहा है।

‘द इंडिया पॉलिसी फोरम 2016-17’ में प्रोफेसर देवेश कपूर, यूनिर्वसिटी ऑफ पेनसेलवेनिया और श्री ोमिन्नो चेटर्जी, प्रिंसटन यूनिर्वसिटी द्वारा प्रकाशित एक दस्तावेज ‘भारतीय कृ-ि की 6 दुविधाऐं’ से लिऐ गऐ कुछ रोचक तथ्य।

उच्च शिक्षा के संबंध में कुछ तथ्यः पशु-चिकित्सक

- भारत में पशुओं की संख्याः लगभग 300 मिलियन
- अन्य कृ-ि पशुओं की संख्याः लगभग 500 मिलियन
- मुर्गी पालकों की संख्याः लगभग 700 मिलियन

व-र् 2014 में

- पशु चिकित्सा कॉलेजः 55
- स्नातक पाठ्यक्रम सीटेंः 3,300
- पशु चिकित्सा कॉलेज से वार्-िक स्नातकों की संख्याः लगभग 2,100

- प्रति कृ-ि पशु के आधार पर स्नातक पशु चिकित्सा कॉलेज की संख्याः लगभग 10 लाख पर 1
- प्रत्येक व-र् ईंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्याः 10 लाख से अधिक

भारत में बहुत ज्यादा ईंजीनियरिंग के स्नातक हैं (10 लाख से अधिक) किंतु बहुत कम पशु चिकित्सक (2,500 से भी कम)। भारत में हमें अपनी प्रमुखताओं में सुधार करना होगा और इस देश का संपूर्ण रूप से विकास और उन्नति करने के उपाय तलाशने होंगे।

भारतीय किसान कृ-ि तकनीकी परामर्श किनसे प्राप्त करें ?

कोई परामर्श 41

विस्तार 6

कृ-ि विज्ञान केन्द्र 3

कृ-ि विश्वविद्यालय 1

पशु चिकित्सा विभाग 8

प्राईवेट कमर्शियल एजेंट 8

प्रगतिशील किसान 21

मीडिया (रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र) 21